International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 15-04-2024, Accepted: 14-05-2024, Published: 30-05-2024
Volume 6, Issue 1, 2024, Page No. 21-24

हरियाणवी लोकजीवन में रचे–बसे भगवान श्रीकृष्ण

महासिंह पूनिया
हिन्दी विभागाध्यक्ष, आई.आई.एच.एस., कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, भारत

सारांश
हरियाणा हरि की भूमि के नाम से विख्यात है। हरि यानि श्रीकृष्ण यहां के लोकजीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यहां की लोक परम्पराओं, रीति–रिवाजों, कहानी, किस्सों, एवं संस्कारों में भगवान श्रीकृष्ण का समागम आज भी जीवंत है। ''यही वो धरा है जहां भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत के युद्ध के समय गांडीवधारी अर्जुन को गीता का उपदेश देकर पूरे विश्व में युद्धभूमि पर गीता के संदेश के माध्यम से संपूर्ण जीवन दर्शन दिया। यही वो धरा है जहां पर सूर्य ग्रहण के समय भगवान श्रीकृष्ण द्वारकाधीश के रूप में पहुंचे थे और उनसे मिलने के लिए बृज से गोपियां एवं राधा विशेष रूप से पधारी थी। यही वो भूमि है जहां भगवान श्रीकृष्ण यमुना के तीर, वंशी की मधुर तान गूंजी और फिर यहीं कुरुक्षेत्र के युद्ध स्थल में वह युगपुरुष बनकर उतरे।''[1] स्वभावतः यहां का जनमानस इन्हें दूर के अलौकिक तथा अनोखे देव के रूप में नहीं मानता। इनके प्रति लोगों की श्रद्धा वैसी ही है जैसी सामान्य जीवन में किसी निकट के श्रद्धेय के प्रति होती है। यहां के लोक साहित्य के भी कृष्ण बहुत जनप्रिय नायक हैं, जो अब भी गोपिकाओं के साथ रास रचाते से लगते हैं। हरियाणवी लोगों का यह चितचोर देवता कितनी सुखद अनुभूति प्रदान करता है। लोकजीवन एवं भगवान श्रीकृष्ण का परस्पर गहरा नाता है। उनकी लीलाएं आज भी लोक में विद्यमान हैं। उनके विविध रूप, आकार, नामकरण लोकजीवन का ऐसा अटूट हिस्सा हैं जिसके बिना लोक कि परिकल्पना नहीं की जा सकती। सर्वकला सम्पन्न भगवान श्रीकृष्ण अर्थात हरि का अवतरण अथवा आणा के आधार पर ही हरियाणा प्रदेश का नामकरण हुआ। हरि का यान या हरि का आणा आदि की बदौलत ही यह प्रदेश हरियाणा कहलाया। ''हरियाणवी लोकजीवन में नामकरण, लोकगीतों, कहानियों, किस्सों, लोक व्यवहार, कथाओं एवं गाथाओं में भगवान श्रीकृष्ण की लोक पारंपरिक परंपरा का आभास होता है। इसीलिए हरियाणा के रोम–रोम में भगवान श्रीकृष्ण रचे एवं बसे हुए हैं।
कृष्ण साक्षात् विश्व के सोलह कला संपन्न अवतार हैं। वे परब्रह्म जगत रचयिता हैं, युगदृष्टा हैं, युगसृष्टा हैं, आस्तिकों के लिए वे मूर्तिमान संरक्षक हैं, उपासकों के लिए वे भगवान हैं।''[2]

मूल शब्दः हरियाणवी लोकजीवन, युद्धभूमि, महाभारत, भगवान श्रीकृष्ण

हरियाणवी लोकगीतों में भगवान श्रीकृष्ण

लोकगीत हरियाणवी लोकजीवन की ऐसी झांकी हैं जिसके माध्यम से संपूर्ण लोक के दर्शन होते हैं। लोकगीत यहां की सांस्कृतिक एवं संस्कारित अभिव्यक्ति का ऐसा माध्यम है जिनमें यहां के अंचल की समस्त विशेषताओं का वृहद स्वरूप दिखाई देता है। तीज से लेकर होली तक जितने भी त्योहार मनाये जाते हैं सभी लोकगीतों के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। इसके साथ ही जन्म से लेकर मृत्यपर्यन्त सोलह संस्कारों की अभिव्यक्ति भी लोकगीतों के माध्यम से उजागर होती है। लोकगीत लोकजीवन की वो संगीतात्मक स्वर लहरियां हैं जिनके माध्यम से संपूर्ण लोक जीवंत हो उठता है। भगवान श्रीकृष्ण हरियाणवी लोकजीवन में रचे एवं बसे हुए हैं। उनके जीवन कहा हर पहलू यहां के लोकगीतों एवं लोरियों में समाहित है। इसके साथ ही उनकी लीलाएं भी लोकजीवन में इतनी ही विख्यात हैं जितने भगवान श्रीकृष्ण। लोकजीवन में राधा और श्रीकृष्ण की जोड़ी को लोक मान्यता ही नहीं अपितु उससे जुड़े हुए गीत भी यहां की सांस्कृतिक झलकियों को प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए यह गीत देखिए जिसमें भगवान श्रीकृष्ण झोली भर फूल लेकर आते हैं और उनके वितरित करते हैं–

''हे हरी जी ल्याए हैं झोली भर फूल
राधा जोगे नां ल्याए भगवान हे जी बांटे सै सब परवार
राधा जोगे नां बचे भगवान
हे जी राधा के मन में सै छोह
टग–टग महलें चढ़ गई भगवान
हे हर जी जा मूंदे अजड किवाड़
सांकल लोहे सार की भगवान
हे हर जी रिम–झिम बरसे है मेह
किरसन भीजें बाहरणै भगवान
हे राधा खोलो नैं अजड़ किवाड
सांकल लोहे सार की भगवान
हे राधा रिमझिम बरसै है मेह
किरसन भीजैं बाहरणैं भगवान
हे राधा खौली नैं अजड़ किवाड़
सांकल लोहे सार की भगवान
हे राधा रिमझिम बरसै है मैह
किरसन भीजैं बाहरणैं भगवान
हे हर जी जांन बांटे झोली भर फूल
वहें जाओ सो रहो भगवान।''[3]

भगवान श्रीकृष्ण की लीलाएं उनके सार्वभौमिक स्वरूप को लोकजीवन में लोकगीतों के माध्यम से चित्रित करते हैं। राधा एवं श्रीकृष्ण से जुड़े हुए किस्से यहां के लोकगीतों की आत्मा है। कूंए पर पनिहारण जब पानी भरती हैं तो वहां कैसे श्रीकृष्ण अवतरित होकर राधा से मिलने के लिए आते हैं। इस लीला का चित्रण इस गीत में देखने को मिलता ळें

''हे जी राधा के मन में था चाव
टग–टग महलें उतरी भगवान
हे हर जी पूछी सैं कूंए पणिहार
कहीं देखे सांवरे भगवान
हे राधा नहीं देखे क्रिस्न मुरार
नहीं देखे सांवरे भगवान
हे हर जी पूछै सैं हाली पाली लोग

नहीं देखे सांवरे भगवान
हे राधा वे सूते बिरछां की छांह
धोल़ी चादर ताण के भगवान
हे राधा देख्या है पल्ला ए उधाड़
किरसन सूते नींद में भगवान
हे हर जी उठो न क्रिस्न मुरार
उठो न प्यारे सांवरे भगवान
हे हर जी नैणां में रम गई धूल़
पैरा मैं छाले पड़ गए भगवान
हे हर जी राधा तो रूसै बारम्बार
किरसन रूसे ना सरै भगवान।''[4]

नन्द बाबा के घर भगवान श्रीकृष्ण का बचपन बीतता है, उससे जुड़ी हुई घटनाएं एवं लीलाएं लोकजीवन में प्रचारित एवं प्रसारित हैं। इस दृष्टि से यशोदा, नन्द बाबा, नन्द, बलराम, गोपियों, राधा, रूक्मिणी सभी से जुड़ी हुई घटनाएं लोकजीवन में रची एवं बसी हुई हैं। लोक विविधताओं का जीवन दर्शन है। इसमें समाहित विविध किस्से एवं कहानियां लोकगीतों के माध्यम से सदियों तक जीवित रहते हैं। नन्द बाबा से जुड़ा हुआ यह गीत देखिए जिसमें आम के माध्यम से पारिवारिक फलभूतियों को दर्शनात्मक स्वरूप में दर्शाया गया है।

''हे जी चंदन रूख कटाय कै
एक अगड़ पलणिआ घड़ा
मेरे अंगणा में अमला बो दिया
एक रेसम डोर बटाय कै
म्हारै अगड़ पलणिओ झूला
मेरे अंगणा में अमला बो दिया
एक धण पिआ दोनूं बैठगे
कोए दोनुआं मैं पड़ गया न्याव
मेरे अंगणां में अमला बो दिया जी
गोरी जै थम जनमोगी धीअड़ी
थारे काट ल्यांगे नाक अर कान
मेरे अंगणां में अमला बो दिया जी
राजा जी जनमैगी थारी भावजी
कोए हम रे जणांगे नन्द लाल
मेरे अंगणां में अमला बो दिया
कोए ये नौ ये दस मासियां जी
कोए आण पड़ेरी नन्द–लाल
मेरे अंगणां में अमला बो दिया
ए जी भली ए करी करतार नै जी
मेरे बचगे नाक अर कान
मेरे अंगणां में अमला बो दिया
गोरी हम रै कह्या हंस खैल कै जी
कोए थम नै करी सत भा
मेरे अंगणां में अमला बो दिया।''[5]

इसी प्रकार पानी भरने की लोक सांस्कृतिक परम्परा हरियाणवी लोकजीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। नदी, नालों एवं कूंओं से पानी भरने की परंपरा को लोकगीतों के साथ जोडक़र देखा जाए तो इसमें महिलाओं की मनोभिव्यक्ति को बहुत सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया गया है। देवकी जब जल भरने के लिए जाती है और यशोदा उसे रास्ते में मिलती है इस घटना को गीत के माध्यम से बहुत सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

''जलभरण देवकी जाय जशोदा रस्ते में मिली हरे।
के दुखड़ा बे बे सास नणद का के बाले भरतार बे बे, के बाले भरतार,
दशोदा रस्ते में मिली हरे।
ना दुखड़ा बेबे सास नणद का ना बाले भरतार बेबे ना बाले भरतार,
दशोदा रस्ते में मिली हरे।
एक दुखड़ा बेबे कोख जली का जिण मेरा मारा सै मान जिन मारा सैमान,
दशोदा रस्ते में मिली हरे।
जे बेबे तेरै छोरा होजा गोकल दिये पुचाय बेबे गोकल दीये पुचाय,
दशोदा रस्ते में मिली हरे।
जे बेबे मेरी छोरी होगी पुत्रका बदला चुकाय बेबे पुत्र का बदला चुकाय,
दशोदा रस्ते में मिली हरे।''[6]

लोक नृत्य हरियाणवी लोकजीवन का महत्पूर्ण हिस्सा हैं। भगवान श्रीकृष्ण की रासलीलाएं भी लोकनृत्यों का उद्गम मानी जाती हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने जिस प्रकार गोपियों के साथ रासलीला रचाकर नृत्य किया उसी प्रकार हरियाणा में फागण के महीने में महिलाएं रासलीला स्वरूप में नृत्य करती हैं जिसे फागण नृत्य कहा जाता है। इसके साथ महिला एवं पुरुष मिलकर जिस नृत्य को करते हैं उसे रसिया नृत्य कहा जाता है। इसका सीधा संबंध भगवान श्रीकृष्ण एवं उसकी रास लीलाओं से है। उदाहरण के लिए यह गीत देखिए जिसमें लोकनृत्य के माध्यम से श्रृंगारिकता का पुट भी स्वतः ही प्रस्फुटित होता है।

''मेरे कृष्ण नै सूंट समाया कदे पहरूं कदे काढूं मैं
मेरे कृष्ण नै चूंदड़ रंगाया कदे ओढूं कदे तारूं मैं
लोग कहवैं तेरा रूप गजब का फूली नहीं समाऊं मैं
ऐसी–ऐसी झाल मेरे उठै बदन मैं पंख लगा उड़ जाऊं मैं
मेरे कृष्ण नै चूंदड़ रंगाया कदे ओढूं कदे तारूं मैं।''[7]

भगवान श्रीकृष्ण की हरियाणवी अभिव्यक्ति या नामकरण का स्वरूप जिसे कहा जाता है उसको काला की संज्ञा दी गई है। कृष्ण का अर्थ भी कृष्ण पक्ष की भांति काला ही होता है। ग्रामीण जीवन में शायद ही कोई ऐसा घर हो जिसमें काला, काली या कालो का नामकरण ना मिलता हो। इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण के नामकरण की प्रतिछाया भी लोकगीतों में कुछ इस प्रकार झलकती है।

''काला–काला कहै गूजरी मत काले का जिक्र करै
काले रंग पै मोरनी रूदन करै
काला–काला कहै गूजरी मत काले का जिक्र करै
मोटे रै मोटे नैन राधा के, उस पै सूरमा अजब रचौ
काला–काला कहै गूजरी मत काले का जिक्र करै
लंबे–लंबे केश राधा के, जिस पै मांग सिंदूर भरै
काला–काला कहै गूजरी मत काले का जिक्र करै।''[8]

गोपियों की मन की भावनाओं को हरियाणा में जन्मे सूरदास ने अपनी लीलाओं के चित्रण के माध्यम से बृज भाषा में जितने सुंदर तरीके से चित्रित किया है विश्व के किसी दूसरे साहित्य में ऐसा चित्रण देखने को नहीं मिलता। इसीलिए सूरदास को वात्सल्य सम्राट की संज्ञा दी गई है। सखियां एवं गोपियां परस्पर अपने मन की भावनाओं को गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त करती हैं। उदाहरण के लिए यह गीत देखिए जिसमें भगवान श्रीकृष्ण की स्नान करने गई गोपियों के वस्त्र उठा लेने की बाल लीला का चित्रण बहुत सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

''खटक मेरे कृष्ण की, कृष्ण की, ऐ कित पावै मुरली आला
सखी ऐ हम पाणी नै गए, पाणी नै गए, पनघट पै मिल्या मुरली आला
डोल म्हारै खोस लिए, खोस लिए, ऐ ओ तो खड्या–खड्या हाथ हिलारया
खटक मेरे कृष्ण की, कृष्ण की, ऐ कित पावै मुरली आला
सखी ऐ हम न्हाण गए, न्हाण गए, गंगा पै मुरली आला
चिर म्हारै ठाए लिए, ठाए लिए
ऐ ओ तो खड्या–खड्या हाथ हिलारया।''[9]

लोकजीवन में नामकरणों में रचे–बसे भगवान श्रीकृष्ण

लोकजीवन में नामकरण का संस्कार प्रथम संस्कार के रूप में माना जाता है। नामकरण की परंपरा में लोक पारंपरिक इतिहास भी समाहित होता है। नामकरण में लोक कल्याणकारी प्रवृतियां आकांक्षाओं का स्थापन विद्यमान रहता है। भगवान श्रीकृष्ण हरियाणवी लोकजीवन में नामकरण परंपरा में रचे एवं बसे हुए हैं। ''योगविद्याधारियों के लिए वे योगीराज हैं, रसिक गोपियों के लिए वे रसराज हैं, गोपीवल्लभ हैं, नृतक हैं, नटराज हैं, कुंजविपिनबिहारी हैं, बांसुरीवादक हैं, स्नेही हैं, विरहतपन का समन करने वाले मनोहर हैं, कमलनेत्री हैं, वक्रभंगिमा वाले हैं, गोपियों के वे सखा हैं, गायों के चरावणहार हैं, गोवंश सवंर्धक हैं, आततताइयों के संहारक हैं, दीन–दुखियों के वे तारक हैं, योद्धाओं के लिए वो रणसिंह हैं, सेना के कुशल संचालकों के लिए चक्रव्यूहधारी हैं, गुरुओं के लिए वे आदर्श शिष्य हैं, बलशालियों के लिए वे बलकार एवं बलधारी हैं।''[10] भक्तों के लिए भगवान हैं, मित्रों के लिए वे सखा हैं, जातिधारकों के लिए वे अहीर हैं, गायपालकों के लिए वे गाय चरैया हैं, काले रंग वालों के लिए वे कलवा हैं, अर्जुन के लिए वे सारथी हैं, जीवन नैय्या पार करने वालों के लिए वो तारणहार हैं, भक्ति के खजानाधारकों के लिए वो रत्नाकर हैं, दार्शनिकों के लिए वो नायक हैं। जीवन का शायद ही ऐसा कोई रूप हो जिसमें भगवान श्रीकृष्ण का स्वरूप देखने को ना मिले। भगवान श्रीकृष्ण की लीलाएं एवं किस्से लोकजीवन में कदम–कदम पर मोतियों की तरह बिखरे हुए पड़े हैं। सृष्टि के आदि से लेकर अंत तक उसके असंख्य रूप लोकजीवन की वो धरोहर है जिसमें सर्वव्यापकता एवं सार्वभौमिकता का समावेश है।

भगवान श्रीकृष्ण से जुड़े हुए अनेक नामकरण व किस्से हरियाणवी लोकजीवन का आज भी हिस्सा हैं। कृष्ण, कृष्णा, काला, मुरारी, बनवारी, कन्हैया, कान्हा, गोपाल, मोहन, बंसीधर, बंसीलाल, गोवर्धन, मुरलीधर, राधेय, राधे, लीलाधर, गोवर्धनधारी, गोपी, गोपना, जगन्नाथ, श्रीहरि, हरि, हरिया, लीलाधारी, माखनचोर, राधेश्याम, स्वामी, नाथ, प्राणपति, गजनाथ, पिताम्बर, गोविंद, गोविंदा, भूपत, किरसण, किरसन, ग्वाला, सुदर्शनधारी, सांवल सा, रघुनन्दन, लाला, श्यामसुन्दर, घनश्याम, मोहनीश, मुकंदलाल, कन्हैयालाल, नीलेश, पार्थसारथी, बंकिम, गोगुला, कानन, बृजेश, वृजेश, श्रीकेशव, श्रीपद्म, रोहणलाल, गदिन, राधेश्याम, आनन्दकंध, नत्था, नागनत्थैया, नत्थु, नत्थैया, धनवन्तरी, बलिहारी, पणमेश्वर, सृजनहार, सरताज, अंतर्यामी, किसन, किसना, गोवर्धनदास, नारायण, नारायणा, मेघाश्याम, जनार्धन, हरिगोपाल, पद्माहस्ता, विभुमत, वामसीधर, कानू, श्रीमोहन, कुंजबिहारी, दयानिधि, कृष्णकान्हा, जगतवंद, नन्दकिशोर, मनहर, बृजनन्दन, बृजबिहारी, राधाकान्ता, शोभित, अनन्ता, वसुमत, वेदमोहन, समदर्शी, मुरारीलाल, सांवरिया, बृजराज, किशोर, युद्धवीर, पिणाखी, गोपेश, मारवेश, सत्यनारायण, बिहारी, रूक्मिनेश, साकेत, माधव, मोधा, बांकेलाल, बृजलाल, राधेश, वेणु, वेणुगोपाल, युद्धराज, चक्रधर, चक्रधारी, गुलजारीलाल, अभिजीत, श्यामक, सामान्तक, बनावारी, यादवेन्द्रा, कृष्णाला, जगमोहन, दामोदर, अनीश, शंखधर, जोगराज, योगराज, श्रीगोपाल, सतवत, रसमेः, प्यारेलाल, कृष्णेन्दू, रविलोचन, दर्शनलाल, यदुनंदन, नटवर, कृष्णमूर्ति, वत्सापल, चत्तः, सरुपा, कृष्णकान्ता, कसांर, कसांरी, प्यारेमोहन, यदुनाथ, रसेश, बाली, नात्थन, बधारायण, छलिया, रसिया, कलावन्त, चित्तचोर, करमा, योग्गी, कर्मयोगी, मन्नारायण, आनन्दकन्द, श्रीहरि, नन्दलाला, बिहारी, बांके–बिहारी, बृजस्वामी, लल्ला, गोपालक, बनराज, बनवारी, मोहनलाल, द्वारकाधीश, राजद्वारिका, गिरधर, गिरधारी, भगवन, भगवान, नंदल, नांदल, श्रीकृष्ण, द्वारकानाथ, जसोदा नन्दन, गोरीनंद, हरचन्द, हरिचन्द, सारथी, मायावी, गोकुला, मोहनप्यारा, दामोदर, खेवणहार, खिवैया, कुन्दन, हरनन्दा, नन्दा, नन्दोटा आदि न जाने कितने नाम हैं जो लोकजीवन में रचे बसे हैं। लोकजीवन में कदम–कदम पर भगवान श्रीकृष्ण के नामों की छटा बिखरी पड़ी है। कृष्ण को काला भी कहा जाता है। लोक में शायद ही कोई ऐसा घर हो जिसमें काला नाम न रखा गया हो? लोक साहित्यिक दृष्टि से भगवान कृष्ण के नामकरण की ऐसी विविधता जिसमें ज्ञान एवं दार्शनिकता का सार छिपा हो लोकजीवन के सिवाय भला कहां देखने को मिलती है? उनके नामों का विविधकरण वास्तव में सृष्टि की सार्वभौकिता का ही स्वरूप है। उनको अचलाः भगवान, अच्युतः अचूक प्रभु, या जिसने कभी भूल ना की हो, अद्भुतहः अद्भुत प्रभु, आदिदेवः देवताओं के स्वामी, अदित्याः देवी अदिति के पुत्र, अजंमाः जिनकी शक्ति असीम और अनंत हो, अजयाः जीवन और मृत्यु के विजेता, अक्षराः अविनाशी प्रभु, अमृतः अमृत जैसा स्वरूप वाले, अनादिहः सर्वप्रथम हैं जो, आनंद सागरः कृपा करने वाले, अनंताः अंतहीन देव, अनंतजितः हमेशा विजयी होने वाले, अनयाः जिनका कोई स्वामी न हो, अनिरुद्धाः जिनका अवरोध न किया जा सके, अपराजीतः जिन्हें हराया न जा सके, अव्युक्ताः माणभ की तरह स्पष्ट, बालगोपालः भगवान कृष्ण का बाल रूप, बलिः सर्व शक्तिमान, चतुर्भुजः चार भुजाओं वाले प्रभु, दानवेंद्रोः वरदान देने वाले, दयालुः करुणा के भंडार, दयानिधिः सब पर दया करने वाले, देवाधिदेवः देवों के देव, देवकीनंदनः देवकी के लाल (पुत्र), देवेशः ईश्वरों के भी ईश्वर, धर्माध्यक्षः धर्म के स्वामी, द्वारकाधीशः द्वारका के अधिपति, गोपालप्रियाः ग्वालों के प्रिय, ज्ञानेश्वरः ज्ञान के भगवान, हरिः प्रकृति के देवता, हिरंयगर्भाः सबसे शक्तिशाली प्रजापति, ऋषिकेशः सभी इंद्रियों के दाता, जगद्गुरुः ब्रह्मांड के गुरु, जगदिशाः सभी के रक्षक, जगन्नाथः ब्रह्मांड के ईश्वर, जनार्धनाः सभी को वरदान देने वाले, जयंतहः सभी दुश्मनों को पराजित करने वाले, ज्योतिरादित्याः जिनमें सूर्य की चमक है, कमलनाथः देवी लक्ष्मी की प्रभु, कमलनयनः जिनके कमल के समान नेत्र हैं, कामसांतकः कंस का वध करने वाले, कंजलोचनः जिनके कमल के समान नेत्र हैं, केशव कृष्णः सांवले रंग वाले, लक्ष्मीकांतः देवी लक्ष्मी की प्रभु, लोकाध्यक्षः तीनों लोक के स्वामी, मदनः प्रेम के प्रतीक, मधुसूदनः मधु–दानवों का वध करने वाले, महेंद्रः इन्द्र के स्वामी, मयूरः मुकुट पर मोर–पंख धारण करने वाले भगवान, मुरलीः बांसुरी बजाने वाले प्रभु, मुरलीमनोहरः मुरली बजाकर मोहने वाले, नंदगोपालः नंद बाबा के पुत्र, नारायणः सबको शरण में लेने वाले, निरंजनः सर्वोत्तम, निर्गुणः जिनमें कोई अवगुण नहीं, पद्महस्ताः जिनके कमल की तरह हाथ हैं, पद्मनाभः जिनकी कमल के आकार की नाभि हो, परब्रह्मनः परम सत्य, परमात्माः सभी प्राणियों के प्रभु, परमपुरुषः श्रेष्ठ व्यक्तित्व वाले, पार्थसारथीः अर्जुन के सारथी, प्रजापतीः सभी प्राणियों के नाथ, पुंण्यः निर्मल व्यक्तित्व, पुर्षोत्तमः उत्तम पुरुष, रविलोचनः सूर्य जिनका नेत्र है, सहस्त्राकाशः हजार आंख वाले प्रभु, सहस्त्रजितः हजारों को जीतने वाले, सहस्त्रपातः जिनके हजारों पैर हों, साक्षीः समस्त देवों के गवाह, सनातनः जिनका कभी अंत न हो, सर्वजनः सब– कुछ जानने वाले, सर्वपालकः सभी का पालन करने वाले, सर्वेश्वरः समस्त देवों से ऊंचे, सत्यवचनः सत्य कहने वाले, सत्यव्तः श्रेष्ठ व्यक्तित्व वाले देव,

शंतहः शांत भाव वाले, श्रेष्ठः महान, श्रीकांतः अद्भुत सौंदर्य के स्वामी, श्यामः जिनका रंग सांवला हो, श्यामसुंदरः सांवले रंग में भी सुंदर दिखने वाले, सुदर्शनः रूपवान, सुमेधः सर्वज्ञानी, सुरेशमः सभी जीव– जंतुओं के देव, स्वर्गपतिः स्वर्ग के राजा, त्रिविक्रमाः तीनों लोकों के विजेता, उपेंद्रः इन्द्र के भाई, वैकुंठनाथः स्वर्ग के रहने वाले, वर्धमानः जिनका कोई आकार न हो, वासुदेवः सभी जगह विद्यमान रहने वाले, विष्णुः भगवान विष्णु के स्वरूप, विश्वदक्षिणहः निपुण और कुशल, विश्वकर्माः ब्रह्मांड के निर्माता, विश्वमूर्तिः पूरे ब्रह्मांड का रूप, विश्वरुपाः ब्रह्मांड– हित के लिए रूप धारण करने वाले, विश्वात्माः ब्रह्मांड की आत्मा, वृषपर्वः धर्म के भगवान, यदवेंद्राः यादव वंश के मुखिया, योगिनाम्पतिः योगियों के स्वामी कितने ही नामों से पुकारा जाता है। भगवान श्रीकृष्ण लोक का वो अंश हैं जिसके बिना लोक की परिकल्पना नहीं की जा सकती। उनकी महिमा अपरमपार हैं, वो लोक के सर्वाधार हैं, भक्तों के खेवणहार हैं, गोपियों के जीवणहार हैं। भगवान श्रीकृष्ण को शत्–शत् नमन।

निष्कर्ष

लोक में भगवान श्रीकृष्ण ऐसे बसे हुए हैं जैसे राधा के मन में वंशीधर। हरियाणा का लोक सांस्कृतिक अवलोकन करते हैं तो उसमें मालुम पड़ता है कि लोकजीवन का शायद ही कोई ऐसा पक्ष एवं पहलू हो जिसका संबंध भगवान श्रीकृष्ण से ना जुड़ा हो। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त लोक रीति–रिवाजों, परम्पराओं, लोक मान्यताओं, संस्कारों, तीज–त्योहारों सभी में भगवान श्रीकृष्ण के किसी न किसी रूप में दर्शन होते हैं। नामकरण की दृष्टि से जितनी लोक सांस्कृतिक विविधता हरियाणा में देखने को मिलती है इतनी कहीं और नहीं। इसलिए कहा जा सकता है कि हरियाणा के रोम–रोम में भगवान श्रीकृष्ण रचे एवं बसे हुए हैं। यहां तक कहा जा सकता है कि हरियाणा एवं श्रीकृष्ण एक–दूसरे के पूरक हैं। हरि का आणा से ही हरियाणा शब्द की व्युत्पति हुई है। इसी से हरियाणा के नामकरण की कसौटी सही एवं प्रासंगिक है। इस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण और हरियाणा दोनों एक–दूसरे के पूरक की भूमिका निभाते हुए सांस्कृतिक विविधताओं का लबादा ओढ़े हुए है। अतः कहा जा सकता है कि भगवान श्रीकृष्ण हरियाणवी लोकजीवन के ऐसे लौकिक एवं अलौकिक अवतार हैं जिसकी विविधता यहां के रोम–रोम में समाहित है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. महासिंह पूनिया, हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2014, पृष्ठ संख्या 11
2. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 20२२, पृष्ठ संख्या 36
3. डॉ. धमबीर शर्मा, दिल्ली प्रदेश की लोक सांस्कृतिक शब्दावली, राजेश प्रकाशन 1991, पृष्ठ संख्या 125
4. डॉ. जय नारायण कौशिक, हरियाणवी हिंदी कोश, प्रकाशन हरियाणा साहित्य अकादमी चंडीगढ़ 1985, पृष्ठ संख्या 144
5. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2022, पृष्ठ संख्या 12
6. देवी शंकर प्रभाकर, हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन, उमेश प्रकाशन, नई दिल्ली 1983, पृष्ठ संख्या 33
7. डॉ. महासिंह पूनिया, हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2014, पृष्ठ संख्या 126
8. देवी शंकर प्रभाकर, हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन, उमेश प्रकाशन, नई दिल्ली 1983, पृष्ठ संख्या 35
9. डॉ. महासिंह पूनिया, लोक साहित्यिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2022, पृष्ठ संख्या 37
10. डॉ. महासिंह पूनिया, हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर, अक्षरधाम प्रकाशन 2014, पृष्ठ संख्या 127